मैं स्टीव जॉब्स बोल रहा हूँ

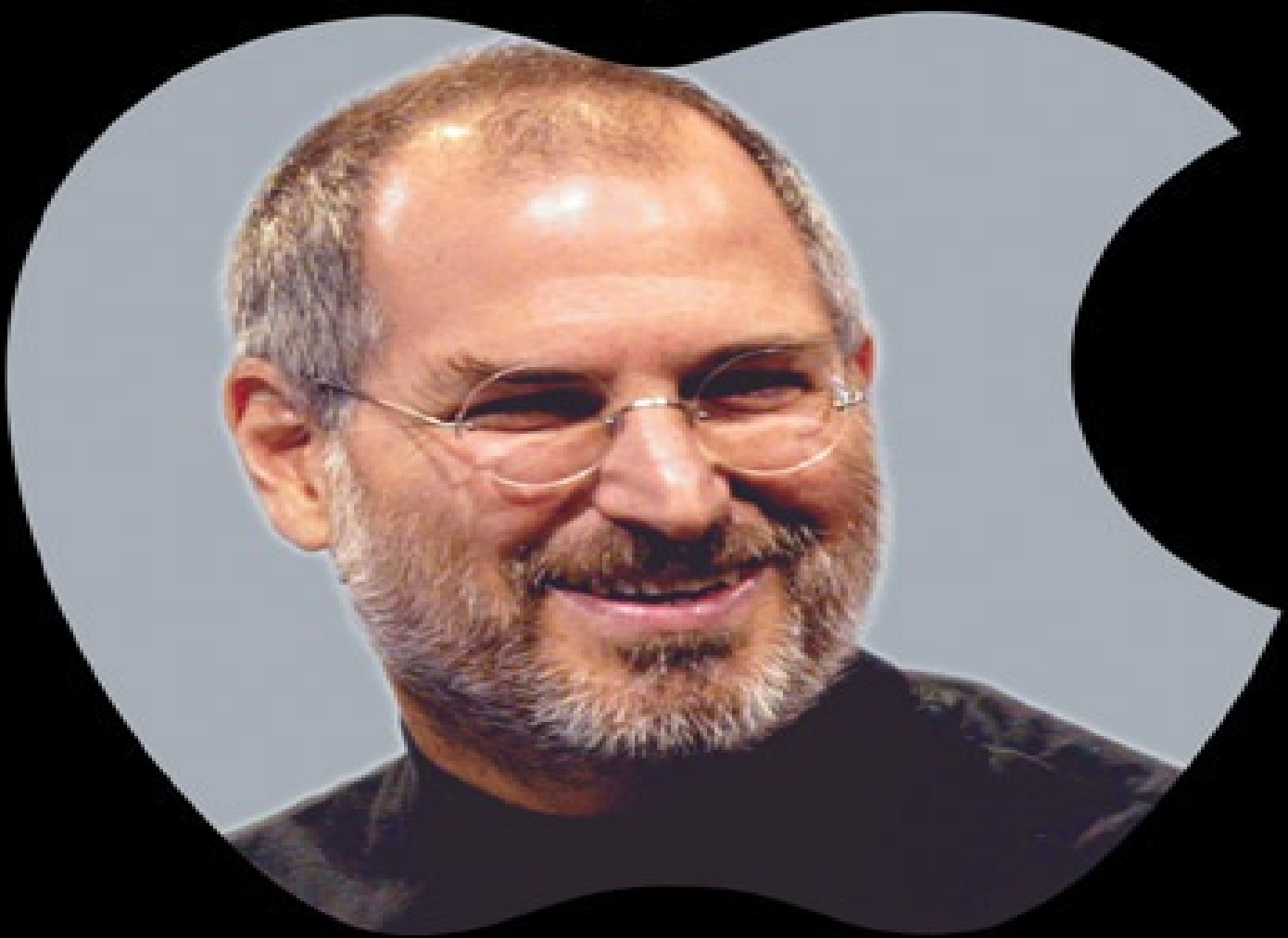

मैं स्टीव जॉब्स बोल रहा हूँ

सं. महेश शर्मा

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

स्टीव जॉब्स की नवाचार सोच को
समर्पित,
जिसने विश्व को
अलग ढंग से सोचने की प्रेरणा दी!

संपादकीय

स्टीव जॉब्स को कंप्यूटर तकनीक का 'माइकेल एंजेलो' कहा गया है। जिन उपकरणो का आविष्कार व प्रसार उन्होंने किया, उनके पीछे सुविधा और साधन की सहजता के साथ कलात्मक प्रस्तुति अहम रहती थी। छोटे कंप्यूटर हों, संगीत सुनने के यंत्र, मोबाइल उपकरण या निपट संकुचित टैबलेट संयंत्र, सुरुचि और प्रतिभा के बल पर स्टीव जॉब्स ने अपने बनाए उपकरणों को दुनिया भर में पहचान दिलाई। ऐसी प्रतिमा कम ही लोगों में मिलती है।

अगाध कल्पनाशीलता के बल पर कंप्यूटरों के सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर से लेकर बनावट तक में उन्होंने अलग छाप छोड़ी। स्टीव जॉब्स ने आईपॉड की खोज करके संगीत की दुनिया को लोगों की जेबों में समेट दिया। आईफोन बनाया तो फोन में कंप्यूटर का जादुई अहसास भर दिया। फिर आईपैड के आविष्कार ने सूचना तकनीक की तमाम सुविधाओं को एक उपकरण में भर दिया। इस तरह उन्होंने कंप्यूटर जैसे उपकरण को रोजमर्रा बरती जानेवाली चीजों की तरह इस्तेमाल करने योग्य बना दिया। इससे दुनिया भर में सूचना क्रांति को काफी बल मिला। प्रस्तुत पुस्तक में स्टीव जॉब्स की प्रेरक सूक्तियों का संकलन किया गया है, जो प्रेरणा तो प्रदान करती ही हैं, हमारा मार्गदर्शन भी करती हैं।

❑

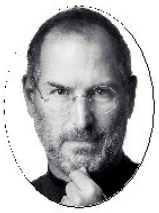

संक्षिप्त जीवनी

स्टीव जॉब्स का जन्म 24 फरवरी,1955 को सैन फ्रांसिस्को, कैलिफोर्निया में हुआ। जन्म के कुछ सप्ताह बाद ही उनकी जैविक माता ने उन्हें कानूनी दस्तावेजों पर दस्तखत करने के बाद सैन फ्रांसिस्को के पॉल और क्लारा जॉब्स के हवाले कर दिया। इस दंपती को दस वर्षों से एक संतान की तलाश थी।

पॉल जॉब्स का व्यक्तित्व अनुशासित था। वे अमेरिकी तटवर्ती सेना में मैकेनिक थे। नौकरी से निवृत्ति के बाद पॉल जॉब्स सैन फ्रांसिस्को पहुँचे। उन्हें कबाड़ में फेंकी गई किसी पुरानी गाड़ी को खरीदकर मरम्मत करने और बेचने में आनंद आता था। ऐसी जर्जर गाड़ियों को सुधारने में वे तल्लीनता के साथ जुट जाते थे। इस तरह हर बार उन्हें अच्छा-खासा मुनाफा होता था।

कैलिफोर्निया का आकर्षण उन्हें अपनी तरफ बुला रहा था। सन्1952 में पॉल और क्लारा सैन फ्रांसिस्को पहुँचकर समुद्र के सामने निर्मित एक अपार्टमेंट में रहने लगे। जल्दी ही एक वित्तीय कंपनी ने पॉल को नौकरी दे दी। पॉल का काम वाहन ऋण लेनेवालों से ऋण-राशि की वसूली करना था। अपने भारी-भरकम व्यक्तित्व एवं तकनीकी दक्षता के कारण वे इस कार्य में सफल साबित हुए।

गोद लिये गए बालक का नाम जॉब्स दंपती ने स्टीवन पॉल जॉब्स रखा। तीन साल की उम्र में ही स्टीवन काफी समझदार और व्यवहार-कुशल नजर आने लगा था। उसके मन में प्रत्येक वस्तु के प्रति कौतूहल का भाव था। वह सवेरे 4 बजे ही जाग जाता था और समस्याओं में फँस जाता था। एक बार उसके साथ खेल रहे एक बालक को अस्पताल लेकर जाना पड़ा, चूँकि दोनों ने चींटी मारनेवाली दवा का स्वाद जानने का प्रयास किया था। एक दूसरी घटना से स्टीव ने बिजली के सॉकेट में पिन फँसाकर खुद को जख्मी कर लिया था। स्टीव की शरारतों के बावजूद उनके माता-पिता ने दूसरी संतान को गोद लेने का इरादा नहीं छोड़ा था और उन्होंने पैटी नामक बालिका को भी गोद ले लिया था, जो उम्र में स्टीव से दो वर्ष छोटी थी।

पिता पॉल जॉब्स की गोद में नन्हे स्टीव

संभवत: स्टीव को एक बालक के रूप में अधिक देखभाल की जरूरत थी; मगर शुरू से ही उसके भीतर प्रतिभा के लक्षण दिखाई देने लगे थे। अपने समय के अमेरिकी बालकों की तरह उन्हें भी शरारतें करना अच्छा लगता था। पड़ोस में बननेवाली 8 एम.एम. की होम मूवी के कैमरे के सामने मुसकराना उन्हें अच्छा लगता था। गलियों में साइकिल चलाने में उन्हें मजा आता था। वे देर तक टी.वी. के सामने बैठे रहना पसंद करते थे। उनकी इस आदत को एक संकेत समझा जा सकता है कि भावी जीवन में वे आसानी से किसी के साथ दोस्ती करनेवाले नहीं थे।

दस साल की उम्र में ही स्टीव इलेक्ट्रॉनिक्स के प्रति गहरी दिलचस्पी लेने लगे थे। उन्हें इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के विभिन्न पुरजे अपनी तरफ आकर्षित करते थे और उनको लेकर उनके मन में तरह-तरह की कल्पनाएँ पैदा होती थीं।

पॉल के पड़ोस में ऐसे कई इंजीनियर रहते थे, जो हैवलेट-पैकर्ड (एच.पी.) और अन्य इलेक्ट्रॉनिक प्रतिष्ठानों में नौकरी कर रहे थे। सप्ताहांत में ऐसे इंजीनियरों को अपने गैरेज में तकनीकी दक्षता का प्रदर्शन करते हुए देखा जा सकता था। स्टीव उनके पास खड़े होकर उनके कौशल को उत्सुकता के साथ देखते रहते थे और सीखने की कोशिश करते थे। ऐसे ही एक इंजीनियर ने स्टीव को कार्बन माइक्रोफोन को छूने की इजाजत दी थी, जिसे वह लेबोरेटरी से अपने साथ लेकर आया था। स्टीव उस उपकरण को हाथ में लेकर दंग रह गए थे और उन्होंने उसके बारे में कई

सवाल इंजीनियर से पूछे थे। स्टीव उस इंजीनियर के पास अकसर जाने लगे थे और इंजीनियर उनकी योग्यता से इस कदर प्रभावित हुआ था कि उसने माइक्रोफोन तोहफे में उन्हें दे दिया था।

सीखने की प्रक्रिया में अकसर स्टीव खुद को संकट में फँसा हुआ महसूस करते थे। वे अंतर्मुखी स्वभाव के छात्र थे। उनके एक सहपाठी ने शुरुआती दिनों को याद करते हुए बाद में बताया था, ''वह तनहा रहनेवाला और आँसू बहानेवाला छात्र था। हम दोनों तैराकी टीम के सदस्य थे। यही एकमात्र खेल था जिसमें स्टीव ने भागीदारी की थी। वह प्रतियोगिता में हार गया था और फिर रोने लगा था। वह सब लड़कों के साथ मेल-जोल नहीं रख सकता था। वह अलग ही किस्म का लड़का था।''

स्टीव के व्यवहार को लेकर कई तरह की समस्याएँ भी पैदा हो रही थीं। दुर्व्यवहार और शिक्षकों के आदेश की अवहेलना के आरोप में कई बार उन्हें स्कूल से निष्कासित भी होना पड़ा था। शिक्षकों के दिए गए कार्य को कई बार वे 'वक्त की बरबादी' कहते हुए पूरा नहीं करते थे और इस तरह उन्हें दंडित होना पड़ता था।

चौदह वर्षीय स्टीव जीवन की नई दिशाओं की खोज कर रहे थे। इलेक्ट्रॉनिक्स से ऊब महसूस होने पर वे माउंटेन व्यू डॉल्फिन क्लब में तैराकी सीखने लगे। उन्हें 'वाटर पोलो' आकर्षित करने लगा। मगर यह शौक भी अधिक दिनों तक नहीं रह पाया। उन्हें लगा कि वे इस तरह के खेलों के लिए उपयुक्त नहीं थे।

सोलह साल की उम्र में स्टीव के बाल लंबे हो गए थे, जो कंधों पर लहराते रहते थे। वे अकसर स्कूल से गायब रहा करते थे। वे प्रौद्योगिकी में माहिर हिप्पियों के एक दल के संपर्क में आए थे। उन हिप्पियों ने लंबी दूरी की मुफ्त फोन कॉल्स करने की विधि खोज निकाली थी। फोन के रिसीवर में निश्चित फ्रीक्वेंसी का इस्तेमाल कर इस तरह की फोन कॉल्स की जाती थीं।

इन हिप्पियों में कंच नामक हिप्पी शामिल था, जिसने फोन कंपनी के कंप्यूटर को उलझन में डालने की विधि ढूँढ़ निकाली थी। स्टीव उससे मिलना चाहते थे। उन्होंने उसका पता लगा लिया। कंच स्टीव और वोज को एक शाम अपने साथ ले गया और अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए दुनिया के विभिन्न हिस्सों में फोन पर मुफ्त बातचीत की। स्टीव और वोज ने कंच की तरह ही अपनी अलग इलेक्ट्रॉनिक मशीन बनाने का फैसला किया।

भारत में

स्टीव जॉब्स के भारत-प्रेम की शुरुआत19 साल की उम्र में उनके दोस्त रॉबर्ट फ्रीडलैंड की प्रेरणा से हुई। बात सन्1974 से शुरू होती है। स्टीव ने घरवालों को बताया कि वह नौकरी छोड़कर गुरु की तलाश में भारत जा रहा है, तो वे आश्चर्य में पड़ गए। बाद में वे परिवारवालों के कहने पर पहले म्यूनिख गए और वहीं से उन्होंने दिल्ली के लिए जहाज पकड़ा। दिल्ली से वे हरिद्वार गए। वहाँ कुंभ मेला चल रहा था। वहाँ से ट्रेन और बस में चढ़ते हुए वे हिमालय की तलहटी में नैनीताल के पास एक गाँव पहुँच गए। यह वही जगह थी जहाँ नीम करौली बाबा रहते थे या पहले रहते थे।

सात महीने बाद घर लौटकर भी स्टीव अपनी तलाश में लगे रहे। ज्ञान-प्राप्ति के अनेक उपागमों को साधते रहे। सुबह-शाम वे जैन दर्शन का अभ्यास करते और दिन के वक्त स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में भौतिकी व इंजीनियरिंग के कोर्स के बारे में जानकारी जुटाते।

पूरब की आध्यात्मिकता, हिंदू धर्म, जैन-बौद्ध दर्शन और ज्ञान की तलाश केवल19 साल के लड़के के जीवन की आई-गई घटना जैसी नहीं थी। आजीवन वे पूरब के धर्मों के अनेक पहलुओं का पालन करते रहे। विशेषकर उन्होंने विश्वास के महत्त्व को समझा। स्टीव ने माना कि भारत के

गाँव के लोगों से उन्होंने तर्क बुद्धि के स्थान पर व्यावहारिक बुद्धि (इंट्यूशन) को महत्त्व देना सीखा। पश्चिम में लोग रीजन या तर्क बुद्धि को महत्त्व देते हैं, जबकि पूरब में इंट्यूशन या व्यावहारिक बुद्धि को अधिक महत्त्व दिया जाता है। स्टीव ने माना कि इंट्यूशन के महत्त्व की समझ ने उनकी सोच की दिशा बदल दी। उसने उनकी कल्पनाशीलता को नए-नए आविष्कारों की दिशा में प्रेरित किया।

ऐपल-1

भारत से लौटने के बाद स्टीव अटारी कंपनी की नौकरी में जुट गए। जब स्टीव भारत गए थे, उसी दौरान उनके मित्र वोजनियाक को हैवलेट-पैकर्ड कंपनी में नौकरी मिल गई थी। वहाँ उनकी तरह कई समर्पित इंजीनियर काम कर रहे थे। एच.पी. की नौकरी करते हुए वे खाली समय में अपने कंप्यूटर के निर्माण में जुटे रहे और जल्द ही प्रभावशाली नतीजा सामने आ गया। कीबोर्ड और स्क्रीन सहित अपने युग के एक शक्तिशाली कंप्यूटर का निर्माण उन्होंने कर दिया था।

वोज ने अपने कंप्यूटर का डिजाइन अपने मित्र स्टीव जॉब्स को दिखाया। स्टीव अत्यंत प्रभावित हुए। वह स्वयं इंजीनियरिंग के बारे में ज्यादा नहीं जानते थे, मगर उनको पता था कि लिखने लायक सॉफ्टवेयरवाले कंप्यूटर की माँग सॉफ्टवेयर के शौकीनों के बीच काफी थी, इसलिए उन्होंने वोज को कंप्यूटर बनाकर बेचने की सलाह दी। यह तय किया गया कि दोनों दोस्त मिलकर कंप्यूटर सेट तैयार करेंगे और बेचेंगे।

शुरुआती बोर्ड तैयार करने के लिए1000 डॉलर की जरूरत थी। इसके लिए स्टीव ने अपनी वोल्क्सवैगन बेच दी। इसी तरह वोज ने अपना एच.पी. 65 कैलकुलेटर बेच दिया। दोनों नई कंपनी के नाम पर विचार करने लगे। कोई अच्छा सा नाम उनके जेहन में नहीं आ रहा था। एक दिन स्टीव ने कहा कि अगर कोई दूसरा नाम नहीं मिला तो कंपनी का नाम 'ऐपल' रख देंगे। उन्हें कोई दूसरा बेहतर नाम नहीं मिल पाया। इस तरह 'ऐपल कंप्यूटर' का जन्म हुआ। ऐपल कंप्यूटर को सबसे पहला ऑर्डर होमब्रीयू कंप्यूटर क्लब के सदस्य पॉल टेरेल ने दिया। इस तरह के कंप्यूटर की माँग बाजार में बढ़नेवाली थी। स्टीव और वोज दुकानों में घूम-घूमकर कंप्यूटर बेचते रहे थे। इस तरह उन्होंने सैकड़ों कंप्यूटर बेच डाले थे। ऐपल कंप्यूटर की शुरुआत इसी तरह हुई थी।

ऐपल-2

जब वोज ने पहला कंप्यूटर बनाया, उसके बाद ही उन्होंने एक उन्नत कंप्यूटर का डिजाइन तैयार करना शुरू किया, जो ऐपल-II के रूप में बाद में दुनिया के सामने आया। ऐपल-II भले ही ऐपल-I के डिजाइन पर आधारित था, मगर कई मायनों में यह अनूठा आविष्कार था। यह कम चिप्स की सहायता से तीव्रता से कार्य करता था। यह पहला कंप्यूटर था, जो रंगीन था। इसे किसी भी रंगीन टी.वी. के साथ जोड़ा जा सकता था। ग्राफिक्स एवं ध्वनि का इस्तेमाल किया जा सकता था। इस कंप्यूटर ने पी.सी. के क्षेत्र में क्रांति ला दी थी।

ऐपल से अलगाव

ऐपल के सी.ई.ओ. जॉन स्कूली से स्टीव के रिश्तों में अब कड़वाहट आ चुकी थी और दोनों ही एक-दूसरे की खुलकर आलोचना करने लगे थे। ऐपल के भीतर स्टीव के विरोध में असंतोष बढ़ रहा था। स्कूली के साथ स्टीव की व्यक्तिगत जंग शुरू हो गई। आखिर स्टीव ने ऐपल के चेयरमैन पद से त्यागपत्र देने की घोषणा कर दी।

विवाह

सन्1991 से1994 की अवधि कॅरियर के नजरिए से स्टीव के लिए ठीक नहीं रही थी; मगर इस अवधि में उनका व्यक्तिगत जीवन खुशहाल रहा था। जब उनकी प्रेमिका टीना रेडसे ने सन्1990 में उनके विवाह प्रस्ताव को ठुकरा दिया, तब उनका परिचय स्टेनफोर्ड की एम.बी.ए. की छात्रा लॉरीन पॉवेल से हुआ। लॉरीन ऐसी युवती थी जिसके व्यक्तित्व से स्टीव पहली नजर में ही प्रभावित हो गए थे। वह सुंदर और स्वतंत्र स्वभाव की

थी। स्टीव ने बाद में बताया कि यह पहली नजर का प्यार था। उन्होंने लॉरीन के साथ लंच पर जाने के लिए एक जरूरी व्यावसायिक बैठक को रद्द कर दिया था।

अगले साल18 मार्च,1991 को स्टीव और लॉरीन का विवाह हो गया। प्रार्थना गृह में स्टीव ने गिने-चुने मेहमानों को ही आमंत्रित किया था। विवाह के सादगीपूर्ण समारोह को स्टीव के जैन गुरु कोबुन चीनो ने संपन्न करवाया था। कुछ महीने बाद लॉरीन ने एक पुत्र को जन्म दिया। स्टीव ने बेटे का नाम रीड पॉल रखा। स्टीव ने अपने कॉलेज (रीड कॉलेज) और अपने पिता (पॉल जॉब्स) के नाम को जोड़कर अपने बेटे का नाम रखा था।

❑

स्टीव जॉब्स के उत्पाद

ऐपल-1

स्टीव जॉब्स और वोजनियाक के संयुक्त प्रयास से सन्1976 में ऐपल-I नामक कंप्यूटर तैयार हुआ। वोजनियाक ने इस कंप्यूटर को डिजाइन किया था और स्टीव ने इसके लिए वित्त व विपणन की व्यवस्था की थी। यह कंप्यूटर खास तौर पर कंप्यूटर में रुचि रखनेवालों तथा इंजीनियरों के लिए था। आम जनता तक यह कंप्यूटर नहीं पहुँच पाया। यह कंप्यूटर स्टीव के पिता की गैराज में तैयार किया गया था।

ऐपल-2

ऐपल-I कंप्यूटर जगत् के लिए आधार बन गया, मगर इसका अधिक विकसित रूप सन्1977 में ऐपल-II के नाम से पेश किया गया। यह पर्सनल कंप्यूटर के रूप में पहला उत्पाद था, जो आम जनता को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया था। इसका डिजाइन भी वोजनियाक ने ही तैयार किया था। सन्1993 तक ऐपल-II बाजार में उपलब्ध रहा।

लीजा कंप्यूटर

आम जनता के लिए सन्1983 में पेश किया गया यह पहला कमर्शियल कंप्यूटर था, जो ग्राफिकल कार्यों को भी करता था तथा एक माउस के जरिए नियंत्रित होता था। यह एक सस्ता और तेज गति से चलनेवाला कंप्यूटर था। यह कंप्यूटर आज के कंप्यूटरों के लिए आधार सिद्ध हुआ; लेकिन यह काफी महँगा था, इसलिए यह कंप्यूटर आम जनता तक नहीं पहुँच पाया। इस कंप्यूटर का नाम स्टीव ने अपनी प्रेमिका से उत्पन्न हुई पुत्री 'लीजा' के नाम पर रखा था।

मैकिंतोश

स्टीव ने 'लीजा' के बाद सन्1984 में 'मैकिंतोश' नामक कंप्यूटर बाजार में पेश किया। स्टीव स्वयं 'लीजा' के प्रदर्शन से संतुष्ट नहीं थे। 'लीजा' की भाँति ही इस कंप्यूटर का भी ग्राफिकल इस्तेमाल किया जा सकता था। यह सस्ता तथा लीजा से भी अधिक तेज गति से चलनेवाला कंप्यूटर था।

रूसी राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव के साथ स्टीव जॉब्स

'नेक्स्ट' कंप्यूटर

ऐपल से अलग होने के बाद स्टीव ने सन्1989 में 'नेक्स्ट' नामक कंपनी स्थापित की और इसी नाम से एक वर्क स्टेशन कंप्यूटर तैयार किया। यह कंप्यूटर बड़ी मात्रा में नहीं आ सका, लेकिन इसका सॉफ्टवेयर मैकिंतोश द्वारा आईफोन के ऑपरेटिंग सिस्टम के लिए आधार बना।

आईमैक

स्टीव ने सन्1998 में 'आईमैक' के नाम से एक पूर्ण विकसित और बहुउपयोगी कंप्यूटर बाजार में प्रस्तुत किया। यह बहुत आकर्षक डिजाइन का कंप्यूटर था। यह कंप्यूटर इंटरनेट से जुड़ा हुआ था। यह पर्सनल कंप्यूटर के क्षेत्र में काफी सफल साबित हुआ।

आईपॉड

सन् 2001 में स्टीव ने पहला डिजिटल म्यूजिक प्लेयर तैयार किया, जिसमें हार्ड डिवाइस भी थी। यह ऐपल का सफल उत्पाद साबित हुआ। यह